
कविकुलगुरु - कालिदास - संस्कृत - विश्वविद्यालयः

छिंकालक्षणं प्रवक्ष्यामि यथा रुद्रेण भाषितं ॥ प्रथमप्रहरे पूर्वछिंका मीत्रदर्शनं कथ्यते ॥
अग्निकोणेछिंका कलहवार्ता कथयति ॥ दक्षिणेछिंका शरीरभयं कथयति ॥ नैऋत्यछिंका
शुभवार्ता कथयति ॥ पश्चिमछिंका संयोगमनं कथयति ॥ वायव्यछिंका राधिनदर्शनं क
थयति ॥ उत्तरछिंका कलहवार्ता कथयति ॥ इशानछिंका भयं कथयति ॥ ब्रह्मस्थानेछिंका कले
शनं कथयति ॥ अथ द्वितियप्रहरे ॥ पूर्वछिंका अग्निभयं कथयति ॥ अग्निकोणेछिंका स्त्रीला
भं कथयति ॥ दक्षिणछिंका कलहवार्ता कथयति ॥ नैऋत्यछींका लाभवार्ता कथयति ॥ पश्चिम
छिंका महाव्याधिः कथयति ॥ वायव्यछिंका लाभं कथयति ॥ उत्तरछिंका शत्रोत्पत्ति कथय
ति ॥ इशानछिंका रिपुभयं कथयति ॥ ब्रह्मस्थानेछिंका चोरभयं कथयति ॥ आत्मछिंका
आत्मभयं ॥ अथ तृतियप्रहरे ॥ पूर्वछिंका मिष्ठान्नलाभं ॥ अग्निकोणेछिंका मित्रदर्शनं ॥
दक्षिणछिंका अशुभवार्ता ॥ नैऋत्यछिंका शुभवार्ता कथयति ॥ पश्चिमछिंका सुव

॥२॥

उत्तरसुफल होइ ॥ इशान्य पिलम्ब होइ ॥ ३ ॥ बुधदिने ॥ पुर्वमनन होइ ॥ अग्नेइ सुफल होइ ॥
दक्षिनसुफल होइ ॥ नैऋत्य पेलम्ब होइ ॥ पश्चिमार्थलाभ ॥ वाइव्य अर्थनासे ॥ उत्तरसु
फल होइ ॥ इसान्यसुफल होइ ॥ ४ ॥ गुरुदिने ॥ पुर्वसुफल होइ ॥ आग्नौ पहानि होइ ॥
दक्षिनसुफल होइ ॥ नैऋत्य वेलम्ब होइ ॥ पश्चिम अर्थलाभ होइ ॥ वाइव्य अर्थनासे ॥
उत्तरसुफल होइ ॥ इसान्यसुफल होइ ॥ ५ ॥ शुक्रदिने ॥ पुर्वसुफल होइ ॥ आग्नेय हानि होइ ॥
दक्षिनेमित्रमिले ॥ नैऋत्यप्राप्ती होइ ॥ पश्चिमसुफल होइ ॥ वाइव्यसुविलम्ब होइ ॥ उत्तरस
ल होइ ॥ इशान्यमित्रमिले ॥ ६ ॥ सनिदिने ॥ पुर्व आग्नौ सुफल होइ ॥ दक्षिण सुखपावे ॥
न्यप्राप्त होइ ॥ पश्चिम धनप्राप्त होइ ॥ वाइव्य विग्रह होइ ॥ उत्तर अर्थलाभ होइ ॥ इसा
फल होइ ॥ इति छिंकलक्षण समाप्त शुभसम्वत १८२२ साके १६८७ मासे नेमा
...केपक्षे सप्तम्यां बुधवासरे लिदं लिखितं पांडेपुर छिंकालक्षणं समाप्तं शुभं ॥

॥२॥

णी लाभं ॥ वाइव्यछिका धनलाभकथयंति ॥ उत्तरछिका नतमदर्शनं ॥ ईशान्यछिकाहि नाएपला
मे [illegible] लस्थाने छिका शरीरनभयं ॥ आकाशछिका आनंदभयं ॥ अथ चतुर्थप्रहरे ॥ पूर्वछिका मिष्टा
न [illegible] मं ॥ आग्निकोणछिका मित्रदर्शणं ॥ दक्षिणछिका अशुभवार्ता ॥ नैऋत्य [illegible] का शुभम
[illegible] ॥ पश्चिमछिका सुवर्णलाभं ॥ वाइव्यछिका धनलाभं ॥ उत्तरछिकावर्णदर्शणं ॥ ईशानछि
[illegible] सुवर्णलाभं ५ [illegible] स्थाने छिकासमीनभयं ॥ आकाशछिका आनंदभयं ॥ रविवासरे ॥ पूर्व विग्रह
देषे ॥ आग्निनै विलंभ होइ ॥ दक्षिणं सौख्यं देषे ॥ नैऋत्य मित्रमिले ॥ पश्चिम उचाटने होइ ॥
वाइव्य मित्रमिले ॥ उत्तर अर्थलाभ होइ ० ईशान [illegible] अर्थनासे ॥ १ ॥ सोमदिने ॥ पूर्व सुफल होइ ॥
आग्नै विलम्ब होइ ० दक्षिण मृत्यु होइ ० नैऋत्य कलह होइ ० पश्चिम कलह होइ ० वाइव्य [illegible]
म्य होइ ॥ उत्तर मित्रमिले ॥ ईशान्य अर्थलाभ होइ ० २ ॥ भौमदिने ॥ पूर्व अर्थलाभ होइ ॥ आग्नै [illegible]
फल होइ ॥ दक्षिण सुफल होइ विलम्ब होइ ॥ नैऋत्य सुफल होइ ॥ पश्चिम अर्थनासे ॥ वाइव्य सुफल होइ

[OrderDescription]
,CREATED=23.10.20 14:59
,TRANSFERRED=2020/10/23 at 15:00:38
,PAGES=2
,TYPE=STD
,NAME=S0004488
,Book Name=M-1252-BHIM LAKSHNAM
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,